पशुपालन

- पशुओं में एन्थ्रेक्स,गलघोटू एवं लंगड़ी बुखार का टीका लगवायें।
- पशुओ को कृमिनाशक दवा पिलायें।
- पशुओं को गर्मी से बचाने के लिये छायादार स्थान में रखे तथा दिन में कम से कम 3 बार शुद्ध एवं ताजा पानी पिलायें।
- पशुओं की पानी की नांद में प्रति सप्ताह दो बार चूना अवश्य डालें।

जून

फसलोत्पादन

- खरीफ फसलों हेतु खेत की तैयारी करें। वर्षा आने के बाद उचित दशा होने पर कल्टीवेटर अथवा पंजा लगाये एवं साथ में पाटा लगाकर खेत को समतल करें।
- सिंचित दशा में पलेवा कर खेत की तैयारी कर मक्का, मूंगफली, सोयाबीन की बुवाई करें।
- मानसून आने पर सभी फसलों की एक ही किस्म लगाने के स्थान पर अधिक संख्या में उन्नत किस्मों के साथ–साथ कुछ क्षेत्र में स्थानीय किस्मों को भी लगायें।
- जून में सोयाबीन, ज्वार, उड़द, मूंगफली की शीघ्र बुवाई के लिये क्षेत्र हेतु अनुसंशानुसार प्रमाणित या आधार बीज किस्मों की बुवाई करें।
- पशुओं के हरे चारे के लिये जवाहर चरी 6, एमपीचरी, लोबिया 1 एवं कोहिनूर आदि लाये।

उद्यानिकी

- बेर की नई शाख फुटानों पर उन्नत किस्म की कलिकायें लगायें तथा आंवले में कलिकायन कर उन्नत किस्म वाले पौधे तैयार करें।
- पपीता, अमरूद एवं अनार आदि फलों के रोपित पौधों में उम्र एवं अनुशंसानुसार उर्वरकों की मात्रा प्रदान करें।
- फलदार वृक्षों के पिछले माह खोदे गये गड्ढो में खाद, नीम की खेती तथा मिट्टी का मिश्रण करने का कार्य करें।
- छोटे फलदार वृक्षो को लू से बचायें।
- टमाटर, बैंगन, खरीफ प्याज, अगेती फूलगोभी तथा मिर्च आदि नर्सरी/रोपिणी तैयार करें।

पशुपालन

- मुर्गियों को परजीवियों से बचाने हेतु पिपराजिन दवा पानी में घोलकर पिलायें।
- कृमिनाशक दवा पिलायें।
- पशुओं को गर्मी व लू से बचायें।
- पशुओं को 50 से 60 ग्राम खनिज लवण एवं 20 ग्राम नमक रोजाना दें।
- गर्मियों के मौसम में पैदा की गई ज्वार में जहरीला पदार्थ हो सकता है, जो पशुओं के लिए हानिकारक होता है। अप्रैल में बिजाई की गई ज्वार 2–3 बार पानी अवश्य दें।
- बरसात के मौसम में चारे की अच्छी पैदावार लेने के लिये ज्वार व मक्का की बिजाई

केन्द्र में कार्यरत वैज्ञानिक मण्डल

क्रं.	वैज्ञानिक	मोबाईल नं.
1	डॉ. रुपेन्द्र खाण्डवे	9826685106
2	डॉ. शालिनी चक्रवर्ती	7869878765
3	डॉ. लाल सिंह	9926315545
4	डॉ. भगवान कुमरावत	9407275707
5	डॉ. ए.के. मिश्रा	9425488220
6	डॉ. सूरज कश्यप	7067957360

प्रति, ...

.....

.....

प्रेषक:

कार्यक्रम समन्वयक

कृषि विज्ञान केन्द्र

डाक बंगला, राजगढ़ (ब्यावरा)–465661

अप्रैल 2023 - जून 2023

समाचार दर्पण

कृषि विज्ञान केन्द्र, राजगढ़
राजमाता विजया राजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

** संरक्षक **
डॉ. अरविन्द शुक्ला
माननीय कुलपति
राजमाता विजयाराजे सिंधिया
कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर

डॉ. एस.आर.के. सिंह
निदेशक
कृषि तकनीक अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान
जोन–9 भा.कृ.अ.प., जबलपुर

डॉ. वाय.पी. सिंह
संचालक विस्तार सेवाएं
रा.वि.सिं.कृ.वि.वि., ग्वालियर

डॉ. एच.डी. वर्मा
अधिष्ठाता
आर.ए.के. कृषि महाविद्यालय, सीहोर

** प्रकाशक **
कृषि विज्ञान केन्द्र, राजगढ़

** संपादक मण्डल **
डॉ. रूपेन्द्र खाण्डवे
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख

डॉ. शालिनी चक्रवर्ती
वरिष्ठ वैज्ञानिक (खाद्य विज्ञान)

डॉ. लाल सिंह
वैज्ञानिक (उद्यानिकी)

डॉ. भगवान कुमरावत
वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान)

डॉ. ए.के. मिश्रा
वैज्ञानिक (पादप प्रजनन)

मोटा अनाज : भविष्य के लिए उपयोगी फसलें

हमारा देश कृषि प्रधान देश है जहां अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन तथा लोगो के खानपान मे बदलाव के चलते हमारे किसानों की आर्थिक दशा एवं स्वास्थ्य दोनों प्रभावित हो रहे है, ऐसे में हमे एक ऐसी तकनीक की आवश्यकता है जो इन दोनों समस्याओं का समाधान कर सके, आज हम देख रहे हैं कि अधिकांश लोगों की रूचि व झुकाव चावल व गेहूं की ओर ही अधिक है जिसके फलस्वरूप किसान भी इन्हीं अनाजों की खेती करना पसंद करते है, परन्तु जलवायु परिवर्तन के कारण कई बार वे फसलें पर्याप्त लाभ नही दे पाती जिससे किसानों को आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, यह आवश्यक है कि इन्हे ज्वार, बाजरा, रागी, कुटकी, कंगनी, सांवा जैसे पोष्टिक धान्यों की खेती की ओर आकर्षित किया जाए।

पौष्टिक धान्य (कदन्न) मोटे अनाजों के अंतर्गत मुख्यतः ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, कोदो, कुटकी तथा सांवा शामिल है, पोषक तत्वों की मात्रा ज्यादा होने तथा प्रोटीन, पाच्य रेशे, विटामिन–बी तथा खनिजो से भरपूर होने के कारण कदन्नों को पौष्टिक धान्य कहा जाता है, इन्हे अक्सर चमत्कारी धान्य के रूप में स्वीकार किया जाता है, चूंकि कदन्न ग्लूटेन मुक्त होते है, इसका ग्लाइसेमिक सूचकांक कम होता है, तथा अन्य अनाजो की तुलना में इसमें कार्बोहाइड्रेट की मात्रा कम पाई जाती है, तथा प्रोटीन, रेंशे एवं खनिज ज्यादा मात्रा में पाए जाते है, अतः यह उत्तम स्वास्थ्य व स्वस्थ शरीर के रख–रखाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। पोषण की दृष्टि से मोटे अनाज प्रमुख अनाजों की तुलना में बेहतर हैं तब भी अभी तक इन फसलों का भोजन में उपयोग परंपरागत उपभोक्ताओं तक ही सीमित हैं तथा मुख्यता गरीब वर्ग के लोगों द्वारा ही खाया जाता हैं। मोटे अनाजों को खाने योग्य बनाने मूल्य सवर्धित खाद्य सामग्री बनाने की प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी का अभाव होने के कारण यह लोगों में ज्यादा लोकप्रिय नहीं हो पाये। उचित प्रसंस्करण के साथ यह संभव हैं कि मोटे अनाजों को विभिन्न तकनीकियों जैसे अंकुरण, दलाई ;डपससपदहद्ध, माल्टिंग ;डंसजपदहद्ध, फूलाना ;च्वचचपदहद्ध आदि द्वारा खाने योग्य बनाया जा सकता हैं। इस दिशा में भारत सरकार कदन्नो के प्रचार–प्रसार हेतु अभियान चला रही है इससे उपभोक्ताओं में कदन्नो के प्रति जागरूकता बढ़ेगी और उनकी मांग में वृद्धि होगी, परिणामस्वरूप किसानों की आय में बढ़ोतरी होगी।

जैव प्रौधोगिकी विभाग भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित मंथन संस्था भोपाल द्वारा संचालित बायोटेक किसान हब प्रोजेक्ट कृषक प्रशिक्षण आयोजित

आकांक्षी जिला राजगढ़ में जैव प्रौधोगिकी विभाग भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित मंथन संस्था भोपाल द्वारा संचालित बायोटेक किसान हब प्रोजेक्ट अंतर्गत वर्ष 2022–23 कृषक प्रशिक्षण आयोजित किये गये। राजगढ़ जिला के सारंगपुर विकास खण्ड में मंथन संस्था भोपाल द्वारा अंगीकृत ग्राम चतरूखेड़ी, धनोरा, बरूखेड़ी, मउ, ग्वाडा, पीपल्यारसोड़ा में 5 कृषक प्रशिक्षण, आयोजित किये गये। प्रशिक्षणो में कृषकों को समसामयिक सलाह के साथ ही एकीकृत कृषि प्रणाली फसलो की उन्नत किस्में, गेहूं, चना, धनिया की कृषि तकनीकी एवं मूल्य संवर्धन द्वारा युवाओ को रोजगार एवं आय संवर्धन करने के तरीके बताए। मिट्टी परीक्षण का महत्व एवं मृदा स्वास्थ्य को बनाये रखने हेतु कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट, तकनीक, जैविक एवं प्राकृतिक खेती अपनाने की सलाह भी दी गई। उक्त प्रशिक्षणो में कृषि विज्ञान केंद्र राजगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. रूपेन्द्र खाण्डवे वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. शालिनी चक्रवर्ती, वैज्ञानिक डॉ. ए.के. मिश्रा एवं परियोजना के इंचार्ज पीआई डॉ. भगवान कुमरावत ने कृषको को प्रशिक्षण दिया।